(7)

May/2019

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No. ....

Deshbandhu College Kalkaji, New Delhi-19
IC
LIBRARY

Sr. No. of Question Paper : 8719

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : **B.A. (H) HINDI – CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।**

1. निम्नलिखित गद्यांशों के सन्दर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए – (10×3=30)

(क) भावों के छानबीन करने पर मंगल का विधान करने वाले दो भाव ठहरते हैं – करुणा और प्रेम। करुणा की गति रक्षा की ओर होती है और प्रेम की रंजन ओर। लोक में प्रथम साध्य रहा है। रंजन का अवसर उनके पीछे आता है। अत: साधनावस्था या प्रयत्नपक्ष को लेकर चलने वाले काव्यों का बीजभाव करुणा ही ठहरती है। इसी से शायद अपने दो नाटकों में रामचरित को लेकर चलने वाले महाकवि भवभूति ने 'करुण' को ही एकमात्र रस कह दिया।

P.T.O.

अथवा

जो हो, जब तक साहित्य का काम केवल मनबहलाव का सामान जुटाना, केवल लोरियाँ गा-गाकर सुलाना, केवल आँसू बहाकर जी हल्का करना था, तब तक उसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी। वह एक दीवाना था जिसके गम दूसरे खाते थे। मगर हम साहित्य को केवल मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सचाइयों का प्रकाश हो- जो हममें गति और बेचौनी पैदा करे सुलाए नहीं; क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।

(ख) कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुंदरी के बाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी, तब हिंदी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया। रीतिकालीन प्रचलित परंपरा से - जिसमें बाह्य वर्णन की प्रधानता थी - इस ढंग की कविताओं में भिन्न प्रकार के भावों की नए ढंग से अभिव्यक्ति हुई। ये नवीन भाव आंतरिक स्पर्श से पुलकित थे।

अथवा

आज नाना स्वरों में वैचित्र्य-संवलित आकार धारण करके एक ही उत्तर मानवचित्त की गंभीरतम भूमिका से निकल रहा है; मानववाद ठीक है, पर मुक्ति किसकी ? क्या व्यक्ति-मानव

की ? नहीं, सामाजिक मानववाद ही उत्तम समाधान है। मनुष्य को, व्यक्ति-मनुष्य को नहीं, बल्कि समष्टि मनुष्य को, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक शोषण से मुक्त करना होगा - "नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।"

(ग) यह कहा जा सकता है कि हमारे मूल राग-विराग नहीं बदले- प्रेम अब भी प्रेम है और घृणा अब भी घृणा, यह साधारणतया स्वीकार किया जा सकता है। पर यह भी ध्यान में रखना होगा कि राग वही रहने पर भी रागात्मक संबंधों की प्रणालियाँ बदल गयी हैं; और कवि का क्षेत्र रागात्मक सम्बन्धों का क्षेत्र होने के कारण इस परिवर्तन का कवि कर्म पर बहुत गहरा असर पड़ा है। निरे 'तथ्य' और 'सत्य' में- या कह लीजिए 'वस्तु-सत्य' और 'व्यक्ति-सत्य'-में यह भेद है कि 'सत्य' वह 'तथ्य' है जिस के साथ हमारा रागात्मक संबंध हैय बिना इस संबंध के वह एक बाह्य वास्तविकता है जो तद्वत काव्य में स्थान नहीं पा सकती। लेकिन जैसे-जैसे बाह्य वास्तविकता बदलती है- वैसे-वैसे हमारे उस से रागात्मक संबंध जोड़ने की प्रणालियां भी बदलती हैं- और अगर नहीं बदलतीं तो उस बाह्य वास्तविकता से हमारा संबंध टूट जाता है।

अथवा

सच बात तो यह है कि आज के कवि को एक साथ तीन क्षेत्रों में संघर्ष करना है। उसके संघर्ष का त्रिविध स्वरूप यह है या होना चाहिए : (1) तत्व के लिए संघर्ष; (2) अभिव्यक्ति को

सक्षम बनाने के लिए संघर्ष; (3) दृष्टि-विकास का संघर्ष। प्रथम का संबंध मानव-वास्तविकता के अधिकाधिक सक्षम उद्घाटन-अवलोकन से है। दूसरे का संबंध चित्रण-सामर्थ्य से है। और तीसरे का संबंध थियरी से है, विश्व-दृष्टि के विकास से है, वास्तविकताओं की व्याख्या से है। यह त्रिविध संघर्ष है।

2. रामचंद्र शुक्ल से पूर्व की हिंदी आलोचना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'साहित्य का उद्देश्य' पाठ के आधार पर प्रेमचंद की साहित्य-दृष्टि पर विचार कीजिए।

3. 'आधुनिक साहित्य: नई मान्यताएँ' पाठ के आधार पर हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचनात्मक मान्यताओं को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'मेरी साहित्यिक मान्यताएँ' पाठ के आलोक में डॉ. नगेन्द्र की आलोचना दृष्टि पर विचार कीजिए।

4. 'तुलसी साहित्य के सामंतविरोधी मूल्य' पाठ के आधार पर रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'नई कविता का आत्मसंघर्ष' पाठ के आधार पर मुक्तिबोध की काव्य-दृष्टि स्पष्ट कीजिए।

May/2019

[This question paper contains 4 printed pages.]

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY KALKAJI, NEW DELHI-19

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 8785 **IC**

Unique Paper Code : 12057609

Name of the Paper : भारतीय साहित्य : पाठपरक अध्ययन

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – C.B.C.S. – DSE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :-

(क) सब जातों की जड़ एक ही है,

कौन इस संसार में निर्धारित कर सकता है कि

किसकी प्रशंसा की जाए और किसकी निन्दा ?

क्यों हम किसी अछूत से घृणा करें,जब वह भी

हमारी तरह पैदा हुआहै, उसमें भी वह हाड़ मांस है,

उसकी कौन सी जाति है,

जो हम सबके अन्दर बसता है ?

P.T.O.

अथवा

आओ नाचें, गाएंगे, जी भर मोद मनाएंगे!
आनंद-छंद-मय, स्वतंत्रता पर मोद मनाएंगे!
बम्हन-ऐयर के रौब दबदबों के दिन अब बीत गए!
गोरांग फिरंगी लाट-साहबों के दिन अब बीत गए!
भिक्षादानों के दिन, भिखमंगी के दिन अब बीत गए।

(ख) हमारे घर के भीतर
बहुत सारी स्त्रियों के बीच जो कोई हो ऐसी
विधाता की सर्वप्रथम कृति सी
समझ लेना, बस वही है दूसरी मेरी जान
सहचर के अभाव में, कम बोलने वाली चकई
बहुतों के बीच भी अकेली
बड़ी ही बैचेनी से काट रही होगी वियोग के दिन
दिखाई देती होगी शिशिर ऋतु में पालों से बर्बाद कमलिनी की तरह।

अथवा

किसी दिन यहाँ महा ओंकार की अविराम ध्वनि
हृदय के तार में ऐक्य के मन्त्र से झंकृत हुई थी।

तप के बल से 'एक' के अनल में 'बहु' की आहुति दे
भेद-भाव भुलाकर एक विराट हृदय को जगाया था।
उसी साधना, उस आराधना की
यज्ञशाला का द्वार आज खुला है
सबको यहाँ सर झुकाकर मिलना होगा -
इस भारत के महामानव के सागर-तट पर।

(ग) भावना प्रधान महादेव अपने पौराणिक नाम राशि महादेव की तरह आशुतोष तो थे ही, साथ-साथ जरा-सा धक्का लगने पर निराश हो जाने का स्वभाव भी रखते थे। इसी कारण जीवन में प्राप्त हुई छोटी-छोटी निराशाओं ने उन्हें जीवन से तंग बना दिया होगा। तारुण्य के कारण इस निराशा की भवना का प्राबल्य बढ़ गया होगा।

अथवा

उसके उन उद्‌गारों से मैं थोड़ी देर के लिए मैं विचारमग्न हो जाताद्य। पश्चिम की ओर आँखों से ओझल होते हुए उस तेजस्वी बिम्ब की ओर मैं - एक बार ध्यानपूर्वक देखता। मेरे छोटे से मन में भावों का तूफान-सा आ जाता। एक हाथ से घोड़ों की वल्गाएँ संभालता हुआ, शोण की दृष्टि बचाकर, आँखों से ओझल होनेवाले उस तेज को मैं दूसरे हाथ से विदाई देता। मन में एक और ही तरह की व्याकुलता होने लगती। (3×10=30)

2. 'सप्तपर्णा' के आधार पर रामकाव्य के काव्य-सौंदर्य का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

नामदेव **अथवा** ललद्यद की भक्ति-भावना का विवेचन कीजिए।

3. वल्लतोल की काव्य सम्वेदना पर विस्तृत निबंध लिखिए। (15)

अथवा

'गीतांजलि' के आधार पर टैगोर की मानवीय चेतना की व्यापकता पर प्रकाश डालिए।

4. 'हयवदन' की पद्‌मिनी का चरित्र चित्रण कीजिए। (15)

अथवा

'अग्निकुंड में खिला गुलाब' शीर्षक की सार्थकता पर विचार करते हुए पाठ का सार लिखिए।

(9)

May/2019

[This question paper contains 4 printed pages.]

LIBRARY

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 8911 **IC**

Unique Paper Code : 12051602

Name of the Paper : Hindi Nibandh Aur Anya Gadya Vidhaein
हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए - (8+7=15)

(क) अभिषेक की बात चली, मन में अभिषेक हो गया और मन में राम के साथ राम का मुकुट प्रतिष्ठित हो गया। मन में प्रतिष्ठित हुआ, इसलिए राम ने राजकीय वेश उतारा, राजकीय रथ से उतरे, राजकीय भोग का परिहार किया, पर मुकुट तो लोगों के मन में था, कौसल्या के मातृ-स्नेह में था, वह कैसे उतरता, वह मस्तक पर विराजमान रहा और राम भीगें तो भीगें मुकुट न भीगने

P.T.O.

पाये, इसकी चिंता बनी रही। राजा राम के साथ उनके अंगरक्षक लक्ष्मण का कमर-बंद दुपट्टा भी (प्रहरी की जागरुकता का उपलक्षण) न भीगने पाये और अखंड सौभाग्यवती सीता की मांग का सिंदूर न भीगने पाये, सीता भले ही भीग जाये।

अथवा

लोभियों का दमन योगियों के दमन से किसी प्रकार कम नहीं होता। लोभ के बल से वे काम और क्रोध को जीतते हैं, सुख की वासना का त्याग करते हैं, मान-अपमान में समान भाव रखते हैं। अब और चाहिए क्या ? जिससे वे कुछ पाने की आशा रखते हैं वह यदि उन्हें दस गालियाँ भी देता है तो उनकी आकृति पर न रोष का कोई चिह्न प्रकट होता है और न मन में ग्लानि होती है। न उन्हें मक्खी चूसने से घृणा होती है और न रक्त चूसने में दया। सुन्दर-से-सुन्दर रूप देखकर वे अपनी एक कौड़ी भी नहीं भूलते।

(ख) जिस बृहत्तर भारत के लिए हरेक भारतीय को उचित अभिमान है, क्या उसका निर्माण इन्हीं घुमक्कड़ी की चरण-धूलि ने नहीं किया? केवल बुद्ध ने ही अपनी घुमक्कड़ी से प्रेरणा नहीं दी, बल्कि घुमक्कड़ों का इतना जोर बुद्ध से एक दो शताब्दियों पूर्व ही था, जिसके ही कारण बुद्ध जैसे घुमक्कड़-राज इस देश में पैदा हो सके। उस वक्त पुरुष ही नहीं, स्त्रियाँ तक जम्बूस-वृक्ष

की शाखा ले अपनी प्रखर प्रतिभा का जौहर दिखाती, बाद में कूपमंडूकों को पराजित करती सारे भारत में मुक्त होकर विचरा करतीं थीं।

अथवा

शूद्र द्विज (या ब्राह्मण) का पूर्व-रूप है, वैसे ही जैसे मूर्ति का पूर्व-रूप अनगढ़ पत्थर। और मैं अपनी अनगढ़ता को गर्व से देखता हूँ, इसलिए कि जब तक अनगढ़ हूँ तभी तक विश्वविराट की मूर्तियों की सम्भावनाएँ मुझमें सुरक्षित हैं। गढ़ा गया नहीं कि एकरूपता, जड़ता गले पड़ी। श्रीकृष्ण की मूर्ति का पत्थर श्रीकृष्ण ही की मूर्ति भावना का प्रतीक रह जाता है। उसे राधा बनाना असंभव है।

2. 'जुबान' निबंध में लेखक ने जुबान की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है, स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'आचरण की सभ्यता' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

3. 'कुटज' निबंध की तात्विक विवेचना कीजिए।

अथवा

'रस आखेटक' निबंध की मूल संवेदना लिखिए। (15)

4. 'निराला की साहित्य साधना' पाठ के आधार पर निराला के जीवन संघर्षों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

आत्मकता के तत्त्वों के आधार पर 'अपनी खबर' की समीक्षा कीजिए। (15)

5. रेखाचित्र के तत्त्वों के आधार पर 'सुभान खाँ' पाठ का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

'अज्ञेय के साथ' पाठ के आधार पर अज्ञेय की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (15)

(10) May 2019

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Deshbandhu College Library Kalkaji, New Delhi-19

Sr. No. of Question Paper : 9000 IC

Unique Paper Code : 12057611

Name of the Paper : अवधारणात्मक साहित्यिक पद

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS – DSE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य है ।

1. लक्षणा और व्यंजना में अंतर स्पष्ट करते हुए लक्षणा के भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । (12)

अथवा

उपमा अलंकार और उसके भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

2. महाकाव्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए । (12)

P.T.O.

अथवा

काव्य-हेतु के विभिन्न अवयवों पर प्रकाश डालिए।

3. जादुई यथार्थवाद की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए यथार्थवाद से उसकी भिन्नता रेखांकित कीजिए। (12)

अथवा

शास्त्रवाद की मुख्य साहित्यिक स्थापनाओं पर विचार कीजिए।

4. आधुनिकता का आशय बताते हुए आधुनिकता और आधुनिकतावाद में अंतर स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

उपन्यास के स्वरूप और उसके तत्त्वों का विवेचन कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (9×3=27)

(क) काव्य-लक्षण ;

(ख) खंडकाव्य ;

(ग) मानववाद ;

(घ) प्रतीक ;

(ङ) छंद ;

(च) उत्तर-आधुनिकता ।